

भगत नामदेव – सबद ५७
मो कउ तूँ न बिसारि तू न बिसारि ॥
रागु मलार, भगत नामदेव, गुरु ग्रंथ साहिब, १२१२

मो कउ तूँ न बिसारि तू न बिसारि ॥
तू न बिसारे रामईआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥
आलावन्ती इहु भ्रमु जो है मुझ ऊपरि सभ कोपिला ॥
सूदु सूदु करि मारि उठाइओ कहा करउ बाप बीठुला ॥ १ ॥
मूए हूए जउ मुकति देहुगे मुकति न जानै कोइला ॥
ए पंडीआ मो कउ ढेढ कहत तेरी पैज पिछंडी होइला ॥ २ ॥
तू जु दइआलु कृपालु कहीअतु हैं अतिभुज भइओ अपारला ॥
फेरि दीआ देहुरा नामे कउ पंडीअन कउ पिछवारला ॥ ३ ॥ २ ॥

सार: द्वैत के प्रति संदेह अलगाव के भ्रम को जन्म देता है जिससे डर और जिसे हम अपना कहते हैं, उसके प्रति रक्षात्मक हो जाते हैं। जब मन अपनी ही मान्यताओं से बंधा रहता है तब अलग अलग दृष्टिकोण उसे खतरे जैसे लग सकते हैं जिससे विश्वास और करुणा की हमारी क्षमता कमज़ोर पड़ जाती है। किंतु जागरूकता का पोषण करके हम जीवन में होने वाले परिवर्तनों के नीचे मौजूद एकत्व की भावना को पहचान सकते हैं। इसे समझने पर, विविधता बँटवारे का कारण बनने के बजाय हमारे सांझे मूल का उत्सव बन जाती है। जैसे-जैसे डर कम होता है, खुलापन बढ़ता है जिससे सहानुभूति पर आधारित रिश्ते बन पाते हैं। इस गहन एकता के स्मरण से हमें विविधतापूर्ण संसार में अपने हृदय को स्थिर, समावेशी और शांत बनाए रखने में सहायता करता है।

मो कउ तूँ न बिसारि तू न बिसारि ॥

मुझे नज़रअंदाज़ न करें, मुझे भूलें नहीं। यह अंतरात्मा की उस तीव्र पुकार को दर्शाता है कि हम उस सर्वव्यापी सत्ता से जुड़े रहें और जागरूकता से जो पाया है, उसे न खोएँ।

तू न बिसारे रामईआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥

हे सर्वव्यापी चेतना, आप मुझे विस्मृत न करें। यह उस जागरूकता को बनाए रखने की बात करता है जो एकता की निरंतर भावना को जीवित रखती है। (१)(विराम)

आलावंती इहु भ्रमु जो है मुझ ऊपरि सभ कोपिला ॥

हे अलावंती, हे धार्मिक गुरु, यह आपके भ्रम के कारण है कि सभी लोग मुझसे क्रोधित हैं। यह दर्शाता है कि एकत्व के प्रति संदेह भय और द्वैत को जन्म देता है जिससे अपनी दृष्टि से भिन्न विचार और दृष्टिकोण अस्वीकार्य प्रतीत होने लगते हैं।

सूदु सूदु करि मारि उठाइओ कहा करउ बाप बीठुला ॥ १ ॥

मुझे नीच और अयोग्य कहकर उन्होंने मारा और वहाँ से निकाल दिया, अब मैं क्या करूँ, हे सर्वपालन करने वाली सार्वभौमिक शक्ति? यह सामाजिक अस्वीकृति के घाव को दर्शाता है जहाँ जाति, सामाजिक स्थिति और जन्म से प्राप्त पहचानें स्वयं और एकत्व की भावना के विरुद्ध हथियार बन जाती हैं। (१)

मूए हूए जउ मुकति देहुगे मुकति न जानै कोइला ॥

अगर मुक्ति केवल मरने के बाद ही मिलती है तब वास्तव में कोई भी मुक्ति को नहीं जान पाता। यह विचार प्रस्तुत करता है कि यदि जागृत जीवन के वर्तमान क्षण में स्पष्टता और शांति का अनुभव नहीं होता तो केवल मुक्ति की तलाश करते रहना निरर्थक है।

ए पंडीआ मो कउ ढेढ कहत तेरी पैज पिछंडी होइला ॥ २ ॥

हे विद्वानों, मुझे नीची जाति का कहने से तुम्हारा अपना सम्मान ही नीचा हो जाता है। यह उस विरोधाभास की ओर संकेत करता है कि जब धार्मिक और सामाजिक मान्यताएँ समानता को अस्वीकार करती हैं, तब उसी दिव्य एकत्व का सिद्धांत कमज़ोर और अस्पष्ट हो जाता है। (२)

तू जु दइआलु कृपालु कहीअतु हैं अतिभुज भइओ अपारला ॥

जिसे तुम दया और कृपा का स्रोत कहते हो, वह असीम और अपार है। यह आत्म-कृपा को ऐसी सर्वव्यापी आंतरिक दया के रूप में दिखाता है जो किसी भी सीमा से कहीं ज़्यादा विशाल है।

फेरि दीआ देहुरा नामे कउ पंडीअन कउ पिछवारला ॥३॥२॥

फिर मंदिर नामदेव की ओर मुड़ गया और धार्मिक विद्वान पीछे रह गए। यह प्रतीक है कि जब सद्गुण भीतर पुनः अपने सही स्थान पर स्थापित होते हैं तब भेदभाव की पहरेदारी और पूर्वाग्रह पीछे छूट जाते हैं। (३)(२)

तत्त्व: भगत नामदेव बताते हैं कि जब धार्मिक या सामाजिक मान्यताएँ समानता को नकारती हैं तब इससे उस एकता के दावे का खंडन होता है जिसे वह बनाए रखने का दावा करती हैं। लोगों को उनके ओहदे, पहचान या विशेषाधिकार के आधार पर बाँटने से दिव्यता केवल संपत्ति बनकर रह जाती है और यह सच्चाई छिप जाती है कि सभी जीव एक ही मूल तत्व से जुड़े हैं। वह कहते हैं कि आत्म-कृपा दया के रूप में प्रकट होती है जो इन बाधाओं को तोड़ती है और हृदय को पूर्वाग्रहों से ऊपर उठकर देखने में सक्षम बनाती है। इस जागृत चेतना में, समानता केवल एक सामाजिक आदर्श न रहकर हमारी आध्यात्मिक एकता की सच्ची पहचान बन जाती है।

सबद व्याख्या विनइंदर कौर और अमरदीप सिंह

Oneness In Diversity Research Foundation

वेबसाइट: OnenessInDiversity.com

ईमेल: onenessindiversityfoundation@gmail.com